प्रार्थना पत्र

|| श्री गणेशाय नमः ||

|| आई श्री आशापुराजी सत्य है ||

1) हमारे जीवन में अनगिनत परेशानियां होती है| जिनका समाधान हमारे बस में नही होता | आप उन परेशानियों के समाधान हेतू किसी भी भगवान या माताजी के स्थानक या फिर किसी भी ज्योतिषी या तांत्रिक के पास गये हो वहा से उनके द्वारा आपको कोई भी चीज जैसे की यंत्र, भस्म, निंबु, कुमकुम, धागा, श्रीफल, रुद्राक्ष अनाज के दाने या अन्य कोई भी वस्तु दी गई हो तो उन सभी वस्तुओं को इकट्ठा करके हाथ जोड कर प्रार्थना करनी है "आप सर्व शक्ती महान हो | हमसे जाने या अन्जाने मे कोई भी गलती हुई हो तो क्षमा करे | आज से हम आपको बंधन मुक्त करते है और हम भी मुक्त होते है | हम आपकी दी हुई वस्तुओं का विसर्जन कर रहे है क्यों की हम अपने सभी कार्य अपनी कुलदेवी / कुलदेवता को सोंप रहे है | तो आप हमें आशीर्वाद दीजिये की सभी कार्य मे हमे सफलता मिले"| इस तरह से प्रार्थना करके उन सभी वस्तुओं का बहते हुए जल मे विसर्जन करना है या फिर आप वहां पर रखे हुए निर्माल्य कलश में ऊन वस्तुओं का विसर्जन कर सकते हो | (भस्म, कुमकुम, अनाज के दाने या धागा आप किसी भी पेड़ के नीचे मिट्टी में विसर्जित कर/ रख सकते है |

२) घर मंदिर की रचना:

आपके घर के मंदिर में नीचे लाल रंग के कपडे का आसन बिछाये | मंदिर के मध्य में कुलदेवी मां / कुलदेवता की तस्वीर या मूर्ती को विराजमान कीजिए | कुलदेवीमां के दाहिने हाथ की तरफ और मंदिर के सामने हम खडे हो तो हमारे बाये हाथ की तरफ गणेश जी को विराजमान कीजिए | उसके बाद आप अन्य भगवान या माताजी की छवी या मुर्तीको गणेश जी की दाई और कुलदेवी की बाई तरफ विराजमान कर सकते हो किन्तु मंदिर में विराजमान सभी देवी देवताओको एक ही पंक्तीमे (लाईनमें) रखे, उपर या नीचे,आगे या पीछे ना रखे | घर के मंदिर में किसी भी भगवान या माताजी के एक से ज्यादा स्वरूप न रखे | अतिरिक्त स्वरूप हो तो घर में कहीं भी रख सकते हो |

घर मंदिर में कुलदेवी मां को चुनरि ओढाये और छत्र भी चढाईये |

घर मंदिर में पितृ माता-पिता की तस्वीर या अपने गुरु की तस्वीर ना रखे |

३) दिया अगरबत्ती करने की योग्य रीत:

घर मंदिर में दिया हमारी बाई तरफ रखिए और अगरबत्ती हमारी दायी तरफ रखिए |

४) सर्वप्रथम मंदिर में पहला दिया और अगरबत्ती श्री गणेशजी को और दूसरा हमारे कुलदेवी / कुलदेवता को करके प्रार्थना करनी है "हे गणेशजी, हे विघ्नहर्ता, मैं, मेरा पति/ पत्नी, हमारे बच्चे और हमारे परिवार के ऊपर किसी भी प्रकार की करणी, बंधन, वशीकरण, ग्रहपीडा, कर्मपीडा, पितृपिडा जैसी विघ्नरुपी खराबी हो तो आप उसे दूर किजीये" |

"हे मां कुलदेवी / कुलदेवता आपके कुल की रक्षा करना आपके हाथ में है | हम आपके संतान है | हमारे सर में बाल है उतनी गलतियां हमसे होती रहती है तो मां हमें क्षमा कीजिये | मां आप अंतर्यामी हो। अपने कुल की जो भी परेशानी है उसे आपको मिटाना हे। हमारी मनोकामना पूर्ण कीजिये और हमें सत्य का मार्ग दिखाइए" ।

५) उसके बाद कुलदेवी/ कुलदेवता के समक्ष हमें जल का पात्र भर के रखना है और प्रार्थना करनी है "आपके समक्ष जल भरा हुआ पात्र रखा है आप इस जल में हमारे लिए औषधी तैयार किजिए | आपको पता है किसके लिए क्या कार्य करना है" | इस उपरांत यह जल प्रसादी के रूपमें परिवार के सभी सदस्यों को ग्रहण करना है। (इस जल को मटके में मिश्रित न करे तथा अन्य किसी भी चीज़ में उपयोग ना करे मात्र इसे प्रसाद के रूप में सेवन करें।)

६) कुलदेवी / कुलदेवता को प्रार्थना करनी है की "हमारे पितृ माता-पिता को अपने शरणमें लीजिये और उनकी आत्मा को शांति और मोक्ष दीजिए "| उसके बाद सिर्फ एक दिन के लिए पनीहार पर (जहां हम पानीका मटका रखते है) पितृ माता-पिता के नाम से एक दिया और अगरबत्ती करके प्रार्थना करनी है (घरकी गृहिणीको सर पर पल्लू ओढ़के रखना हे तथा पुरुषो को भी अपना सर ढकना हे) "हे पितृ माता-पिता आपकी जो भी इच्छा हो हम पुरी करेंगे, हम आपको दूध से तृप्त करेंगे| आपकी आत्मा को शांति और मोक्ष मिले इसलिये आप अपने कुलदेवी/ कुलदेवता के शरणमें जाईये और आशीर्वाद दीजिये के हमें हमारे हर एक कार्य में सफलता मिले "| {पितृ माता-पिता का ध्यान करना, उनके नाम पर ब्रामणो को, गौमाता को, जरूरतमंदों को (गरीबों को) भोजन करवाना तथा उनके निमित्तक यथासंभव दान धर्म करना।}

जय माताजी